सरगुजा के लोक-जीवन में 'राम'

पुनीत कुमार राय

रघुकुल भूषण, सूर्यवंश शिरोमणि, दीनबंधु करुणानिधान, सियापति, दशरथनंदन श्रीराम की गाथा भारतीयता का अमृत तत्व है। क्या है भारतीयता? भारतीयता के क्या प्रतिमान हैं? क्या प्रतिज्ञाएँ है? यह सब कुछ यदि जानना-समझना हो तो रामकथा का अवगाहन कीजिए। कहना न होगा कि रामकथा भारतीयता को परिभाषित एवं व्याख्यायित करती है। जल में लवण की तरह यह कथा भारतीय जन-जीवन में, साहित्य-संस्कृति में घुली-मिली हुई है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ठीक कहा है कि "भारत वर्ष रामायण में अपनी मनचाही चीज पाता है। मूल्य-बोध, सौन्दर्य-बोध, जीवन-बोध का यह असाधारण आख्यान हमारे लिए इतिहास से बढ़कर है, इतिहास से कहीं ज्यादा प्राणवान और प्रेरक .....।" इस कथा की सत्य-असत्यता को लेकर विद्वान करते रहें माथा-पच्ची, तर्क-वितर्क। "भारतवासी के लिए उसके अपने घर के लोग इतने सत्य नहीं हैं जितने कि राम, लक्ष्मण, सीता उसके लिए सत्य हैं।" (रवीन्द्र रचना संचयन, पृ. : 673) सुदूर अतीत की यह गाथा क्या कभी विस्मृत हो सकेगी? कदापि नहीं, क्योंकि साधारण नहीं हैं यह कथा। यह तो हमारी अस्मिता का प्राणतत्व है, हमारी संस्कृति का स्रोत है। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने बिल्कुल सत्य लिखा है– "जब तक हमारी भारत भूमि में गंगा और कावेरी प्रवाहमान हैं, तब तक सीता-राम की कथा भी अबाध, स्त्री-पुरुष सब में प्रचलित रहेगी, माता की तरह हमारी जनता की रक्षा करती रहेगी।" (दशरथ-नंदन श्रीराम, पृ.-7) 'रामोविग्रहवान धर्म' राम धर्म के मूर्तिमान स्वरूप हैं। वह धर्म, जो जीवन को उच्चतर आशय प्रदान कर हमारे देवत्व को प्रकट करता है। वह धर्म जो धारण करने योग्य है। रामकथा मूलतः और अन्ततः शील प्रतिष्ठा की कथा है। यह शील ही जीवन में, समाज में मंगल का विधान करता है। सचमुच रामकथा 'कलिमल हरनी मंगल करनी' है। 'विमल विवेक' प्रदायिनी है, विषमता, विभ्रम का शमन करने वाली है। यह विपत्ति, बाधा, विफलता के नैराश्यपूर्ण, दिशाहीन क्षणों में हममें सांत्वना एवं साहस का संचार करती है, मूल्यों को मृत होने से बचाती है। इसी कारण यह गाथा वाल्मीकि, कालिदास से लेकर गाँधी, लोहिया तक को प्रेरित, मुग्ध करती रही है। भारत वर्ष का प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक वर्ग-समुदाय प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से किसी-न-किसी तरह इस गाथा से अवश्य संबद्ध रहा है। सबके अपने-अपने राम हैं। दशरथ के राम, विश्वामित्र के राम, वशिष्ठ के राम, सीता के राम, भरत के राम, केवट के राम, निषादराज के राम, ऋषि-मुनियों के राम, वनवासियों के राम, अहिल्या के राम, शबरी के राम, हनुमान के राम, विभीषण के राम, सबके अपने-अपने राम हैं। कितने राम हैं? यह निश्चित करने में बुद्धि चकरा जाएगी। जैसे-जैसे राम का दक्षिणायन होता है वैसे-वैसे ही संबंधों का नया-नया साझापन सृजित होता जाता है, विभेद-विभाजन विलुप्त हो जाते हैं। मानों राम वनवास नहीं एकत्व का राष्ट्रीय अनुष्ठान कर रहे हों। कहना न होगा कि रामकथा समरसता का महान संदर्भ है। कहाँ नहीं हैं राम? चाहे बौद्ध हो या जैन, सवर्ण हो या अवर्ण, आर्य हो या अनार्य, उत्तर हो या दक्षिण, लोक हो या शास्त्र, सर्वत्र राम विद्यमान हैं। द. एशिया, द. पू. एशिया, मध्य एशिया, तिब्बत, कोरिया तक यह गाथा प्रचलित है। इस गाथा की व्यापकता एवं व्याप्ति निरंतरता एवं

नव्यता, बहुवचनता एवं सांस्कृतिक प्रारूपों-परंपराओं की पृष्ठभूमि-प्रेरणा के रूप में विद्यमानता सचमुच विस्मित करती है। विश्व में कदाचित ही किसी कथा की इतनी अविच्छिन्न परंपरा, इतना वैविध्यपूर्ण विस्तार हो।

प्राचीन काल में महाकांतर, दण्डकारण्य, दक्षिणापथ, दक्षिण कोसल के रूप में ख्यात छत्तीसगढ़ रामकथा के संदर्भों से भरा पड़ा है। इतिहास, पुरातत्व, लोकविश्वास जनश्रुतियों के अनुसार यह माता कौशल्या की जन्म भूमि है, वाल्मीकि, श्रृंगी ऋषि, मातंग ऋषि, शबरी, खरदूषण, रामवनवास एवं कुश की इस क्षेत्र से सम्बद्धता रही है। छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं झारखण्ड का सीमावर्ती उत्तरी हिस्सा सरगुजा कहलाता है। सुरगुजा (वह भूमि जो देवताओं की लीला से गुँजायमान रहती हो), सुरगजा (देवताओं और हाथियों वाली धरती) के रूप में विख्यात सरगुजा के अंतर्गत पांच जिले सरगुजा, बलरामपुर, कोरिया, जशपुर, सूरजपुर आते हैं। सरगुजा एक पठारी-पहाड़ी अंचल है। 'छत्तीसगढ़ मईयां' का यह मोरमुकुट है। सरगुजा जनजातीय बहुल अंचल है। कंवर, उरांव, गोंड, कोरबा, कोल, पण्डोर, कोड़ाकू पनिका, बिंझवार, नगेशिया इत्यादि जनजातियाँ यहाँ निवास करती हैं। सरगुजा अंचल एवं यहाँ का जनजातीय समाज रामकथा के अनेक अध्यायों, अवशेषों, स्मृतियों को अपने में समेटे-संजोए हुए हैं। राम से इस अंचल का नाता और इस अंचल पर राम का प्रभाव बहुत गहरा है, जिसे देखकर विस्मय भी होता है और सुखद अनुभूति भी। अध्येताओं एवं लोक विश्वास के अनुसार वनवासकाल में राम ने यहाँ निवास किया था। कोरिया जिले के जनकपुर के निकट स्थित सीतामढ़ी-हरचौका नामक स्थान से श्रीराम छत्तीसगढ़ में प्रवेश करते हैं। इसी तरह कोरिया जिले में सीतामढ़ी घाघरा, महादेवन, खमरौध, कोटाडोल, सीतामढी, छतौडा आश्रम, सिद्धी बाबा आश्रम, देवसील, सीतामढ़ी (गांगी रानी) रामगढ़, अमृतधारा, जटा शंकरी गुफा एवं सूरजपुर जिला में जोगीमाड़ा चपदा (पत्थर गुफा) कुदरगढ़ वन देवी, सीता लेखनी पहाड़ और लक्ष्मण पंजा, रक्सगंडा, रामेश्वर नगर का तीर धनुष, सारासोर, श्री राम लक्ष्मण पायन मरहट्ठा, साल्होह और बेसाही पहाड़ पोड़ी, अर्द्धनारीश्वर जलेश्वरनाथ शिवपुर, महरमुण्डाफ ऋषि का आश्रम बिलद्वारगुफा, विश्रवाऋषि का आश्रम एवं लक्ष्मण पंजा, पिल्खा पहाड़ तथा सरगुजा जिले में विश्रामपुर, अम्बिकापुर, बड़े दामाली का बंदरकोट, यमदग्नि ऋषि की तपोभूमि देवगढ़ और सतमहला, महेशपुर, सीताबेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा, जोगीमाड़ा : रामगढ़, लक्ष्मणगढ़ और मिरगा डाड़, मैनपाट, मंगरेलगढ़ महारानीपुर का देउर मंदिर, जशपुर जिले के शिवमंदिर, बगीचा, लेखा पत्बर रेंगले, लक्ष्मण पंजा रिंगारघाट, बलरामपुर जिले के सीता चौक, सीता नाला (राजपुर विकास खण्ड) का संबंध रामकथा से बतलाया जाता है। वनवास के समय राम, लक्ष्मण, सीता ने सरगुजा में एक लम्बी अवधि तक भ्रमण किया है। राम वन गमन पथ के कई पड़ाव सरगुजा में हैं। डॉ. रामअवतार शर्मा ने 'जहँ : जहँ राम चरण चलि जाहिं .....' नामक अपनी शोधपरक पुस्तक में सरगुजा में भी रामवन गमन पथ को दिखलाया है। इन स्थलों के संबंध में राम, सीता, लक्ष्मण से जुड़ी कई जनश्रुतियाँ यहाँ प्रचलित हैं। कहीं राम ने वास किया है तो कहीं उनके तीर धनुष के निशान हैं, कहीं पंजो के निशान। उदयपुर के पास रामगिरि (रामगढ़) स्थित है। ऐसा विश्वास है कि यहाँ प्रभु राम वनवास अवधि में निवास किये थे और यहीं पर कालिदास ने 'मेघदूत' की रचना की थी। यहाँ कई गुफाएँ हैं, जिनमें सीता बेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा, विशिष्ट गुफा प्रसिद्ध हैं। यहीं पर एक कुण्ड है, जिसे सीता कुण्ड कहा जाता है। रेणु नदी के तट पर देवगढ़ नामक स्थान है, जहाँ

एक प्राचीन शिव मंदिर के भग्नावशेष हैं, इस स्थल को परशुराम की तपोभूमि माना जाता है। परशुराम की पत्नी रेणुका के नाम पर ही इस नदी का नामकरण रेणु हुआ है। रेणु नदी पर एक रक्सगंडा प्रपात है। रक्सगंडा का अर्थ है 'राक्षसों का ढेर'। ऐसा विश्वास है कि इस स्थान पर राम ने राक्षसों को मारकर ढेर लगा दिया था। प्रपात के समीप एक पोखरी है, जो सीता पोखरी नाम से प्रसिद्ध है। सूरजपुर के पास भैयाथान के निकट की पहाड़ियों के विषय में लोग बतलाते हैं कि राम यहाँ ऋषि-मुनियों का कुशलक्षेम पूछने के लिए आये थे। अम्बिकापुर के निकट पिल्खा पहाड़ है, इस पहाड़ को लेकर भी राम-लक्ष्मण की कई कथाएँ इस क्षेत्र में प्रचलित है। पिल्खा पहाड़ पर लक्ष्मण पंजा स्थित है। ऐसा विश्वास है कि वनवासकाल में राम, लक्ष्मण, सीता यहाँ आये थे। इस संबंध में एक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार लक्ष्मण पिल्खा की दोनों पहाड़ियों को कांवर में लादकर रामगढ़ की पहाड़ी पर ले जाना चाहते थे। कांवर रामरेड़ी (रतनजोत) का बना था। कांवर टूट गयी और दोनों पहाड़ दो तरफ गिर गये। जहाँ कांवर टूटी उस स्थल पर लक्ष्मण के पंजे और हाथ के निशान बन गये, जो आज भी मौजूद हैं, जिसे ग्रामीण श्रद्धा के साथ पूजते हैं। मैनपाट के संबंध में मान्यता है कि यहाँ शरभंग ऋषि का आश्रम था। यहाँ एक गाँव है, जिसका नाम शरभंग है। मैनपाट में भी प्रभु राम आये थे। बलरामपुर के राजपुर ब्लाक में स्थित सीता चौक के बारे में मान्यता है कि यहाँ सीता-राम का विवाह हुआ था। लक्ष्मण पंजा रिंगार घाट के बारे में लोकधारणा है कि यहाँ लक्ष्मण ने वराह रूप धारण किये हुए राक्षस का वध किया था। इसी तरह श्रीकोट के पास वंडिपा एवं भालूवाड़ी नामक जगह है। लोग मानते हैं कि वंडिपा में राम ने निवास किया था और भालूवाड़ी में जामवंत की गुफा थी।

इसी तरह इस अंचल में और भी कई जगहें हैं, जिनका संबंध राम से बतलाया जाता है। इनमें कितनी सत्यता है और कितनी असत्यता, यह राम ही जाने। किंतु पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही मान्यताएँ, विश्वास तो यही सिद्ध करते हैं कि यह अंचल राममय रहा है। सूर्यवंश के सुकुमार राजकुमार ने यहाँ तापस वेश में जंगल-जंगल, पहाड़-पहाड़ विचरण किये हैं और अपने शील, शौर्य, शोभा से परिपूर्ण व्यक्तित्व का यहाँ के वनवासियों के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ी है। इस अंचल के लिए राम अपरिचित नहीं, अपितु अत्यंत आत्मीय है। तभी तो इतनी कथाएँ, विश्वास, मान्यताएँ प्रचलित हैं। सरगुजा अंचल में कई स्थान ऐसे हैं, जिनका नामकरण रामकथा के पात्रों, स्थानों के नाम पर हुआ है। जैसे : रामगढ़, रामपुर, रामनगर रामगाँव, लक्ष्मणपुर, लखनपुर, सीतापुर, लखनटोली, सीताबेंगरा, सीतापुर, भरतपुर, हनुमानगढ़, जनकपुर, जामवंतपुर, लवकुशनगर, परशुरामपुर। इसी तरह यहाँ की प्राय: सभी जनजातियों के नाम में 'राम' शब्द मिलता है जैसे : रामदेव राम, गोपाल राम, विकुल राम, रामबाबू, पीनू राम, टेकराम, जितन राम, बोधा राम, धेलई राम, प्रकाश राम, इत्यादि। अभिवादन में भी लोग राम-राम, सीता-राम, जय-जय राम का प्रयोग करते हैं। वनवासी समाज अपने पारंपरिक देवी-देवता दूल्हा देव, बड़का देव, बूढ़ादेव, भैंसासुर देव, सिंगबोंगा, मारंग बोंगा, खैर माता, बरही देवी, खुरिया रानी इत्यादि के साथ सीता-राम के प्रति भी श्रद्धा रखता है। सरगुजा के बारे में कहा जाता है कि बारह महीने तेरह त्यौहार। छेरता, करमा, नवा खाई, इत्यादि त्यौहारों के साथ देवारी, दशहरा को भी यहाँ का वनवासी समाज धूम-धाम से मनाता है। करमा, डोमकच एवं सैला यहाँ के प्रमुख लोक नृत्य हैं। इनमें गाये जाने वाले गीतों में से कई रामकथा विषयक हैं। सैला नृत्य के बारे में तो

मान्यता यह है कि रावण पर राम की विजय के उल्लास में यहाँ के वनवासियों द्वारा यह नृत्य किया गया था। पहाड़ (शैल) पर किये जाने के कारण यह नृत्य सैला कहलाया। अब जरा सोचिए, राम कहाँ के, युद्ध कहाँ पर हुए और उल्लास कहाँ मनाया जा रहा है? यही अद्भुत भारत है।

किसी समाज की स्मृतियों, संवेदना के स्तरों का सच्चा साक्षात्कार हमें उस समाज की लोककथाओं एवं लोकगीतों में मिलता है। इस अंचल की लोककथाओं में राम का संदर्भ बहुत है, विस्ताराधिक्य के कारण मैं उनका उल्लेख नहीं करूँगा, किंतु यहाँ की जो वाचिक रामकथा (लबेद रामायण) है, उसकी कुछ नवीनताएँ अवश्य बतलाना चाहूँगा। वनवासी समाज में जो रामकथा प्रचलित है उसके अनुसार कैकेयी के एक पुत्र नहीं दो पुत्र थे, भरत और शत्रुघ्न। लवकुश के जन्म की कथा बड़ी रोचक है। यहाँ की लबेद (मौखिक) रामायण के अनुसार लव और कुश जुड़वा नहीं पैदा हुए थे। कुश, मुनि की मंत्रशक्ति द्वारा कुशां से उत्पन्न हुए थे। मुनि अंधे थे। सीता जी उनके आश्रम में रहती थी। तभी लव का जन्म हुआ। सीता जी लव को कुशा के झूले में सुलाकर पास झरने में नहाने चली गयीं। वहाँ एक बंदरिया इधर से उधर उछल-कूद कर रही थी। उसे देखकर सीता ने कहा कि अरे बंदरिया इधर से उधर क्यों कूद रही है? तेरा बच्चा पानी में गिर जाएगा। बंदरिया बोली ओय सीते मेरा बच्चा तो मेरे साथ है तू अपने बच्चे की चिंता कर, अंधे मुनि के पास छोड़कर आयी है कहीं कोई जानवर उठा ले गया तो? इतना सुनते ही सीता तुरंत आश्रम जाकर मुनि को बिना बतलाये ही लव को अपने साथ ले आयी, मुनि ने कुशा के झूले को हल्का जानकर टटोला लव नहीं था, वह चिंता में पड़ गये कि कहीं कोई जानवर तो नहीं लव को उठा ले गया, अब सीता को क्या उत्तर दूँगा? तब उस मुनि ने कुशा को जल से अभिमंत्रित कर दूसरा बच्चा उत्पन्न कर झूले में लिटा दिया इसी का नाम कुश पड़ा। इसी तरह लबेद रामायण में राम और हनुमान में मामा भांजा का संबंध बतलाया गया है। लबेद रामायण को यदि संकलित और प्रकाशित किया जाए तो एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य होगा। सरगुजा के लोकगीतों में राम-सीता संबंधी गीत खूब मिलते हैं। राम विवाह, राम वनवास, सीता हरण, बालि वध, सीता की अग्नि परीक्षा इत्यादि प्रसंगों की बड़ी भावपूर्ण अभिव्यक्ति गीतों में हुई है–

“सीता राम भांवर ले रहे हैं और वर्षा हो रही है–

कामे उलोथे कारी बदरिया, कामे ले बरसे बूंद,

सरग उलोथे कारी बदरिया, धरती ले बरसे बूंद,

काकर भींजे नवरंग चुनरी, काकर भींजे उरमाल,

सीता के भींजे नवरंग चुनरी, राम के भींजे उरमाल,

कैसे के चिन्होंव सीता जानकी, कैसे चिन्हों भगवान,

कलसा बाहें चिन्हों सीता जानकी, मुकुथ खोंचे भगवान।”

राम रामगढ़ की पहाड़ियों में निवास कर रहे हैं उनकी मनोहर छवि के दर्शन पाने के लिए लोग अधीर हैं–

“चला चला देख जाबो, रामगढ़ आईस है भगवान।

सूरज कसन रामचंदर, ओहीं कसन भाई।।

बड़ सुघर सीता माई, चला चली जोहार आई।

आईन हें भगवान, चला चली देखे जाबो।।”

कैकेयी के वरदान एवं दशरथ की कातरता को एक करमा गीत में इस तरह निरूपित किया गया है–

“झेनी मांगू ऐसन बरदाने कैकई रानी

झेनी मांगू रे, झेनी मांगू ऐसन बरदाने

बूढ़त काल में रामजी ला पुतर पाये

राखे हवों परान के अधारे, कैकेई रानी

झेनी मांगू रे, झेनि मांगू ऐसन बरदाने

ले लेबे रानी तैं राज धन लक्ष्मी

ले लेबे सोनवां भंडारे, कैकेई रानी

झेनि मांगू रे, झेनि मांगू ऐसन बरदाने।”

सरगुजिया लोकगीतों में राम-सीता पूरी तरह सरगुजिपामन की तरह आते हैं। सीता-राम विषयक ये गीत यहाँ के वनवासी समाज में विद्यमान राम के प्रति आत्मीयता को प्रकट करते हैं। राम के जीवन प्रसंगों को गीतों में गूँथकर यहाँ के वनवासियों का भावुक मन सदियों से आहलादित, आर्द्र होता चला आ रहा है।

20वीं सदी में इस अंचल में एक बहुत लोकप्रिय संत, समाज-सुधारक हुए हैं 'गहिरा गुरु' (1905-1996)। यहाँ पिछड़ा एवं पशुवत जीवन जी रहे वनवासी समाज के उत्थान के लिए उन्होंने आजीवन अनथक प्रयास किया। रामकथा के माध्यम से वह लोक शिक्षण, लोक संस्कार का महत् कार्य करते हैं। उन्होंने यहाँ गाँव-गाँव में रात्रि में सामूहिक रूप से मानस कीर्तन की परंपरा शुरू की।

राम तो यहाँ के सामूहिक मानस में पहले से विद्यमान थे, गहिरा गुरु ने रामकथा को संगठन, स्वालंबन, संस्कार का माध्यम बना दिया। आज भी गहिरा गुरु द्वारा प्रेरित प्रचलित कीर्तनियाँ कंठो को यहाँ के कई गाँवों में सहज ही सुना जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सरगुजा अंचल में राम की बड़ी आत्मीयता विद्यमान है। सुदूर अतीत से लेकर आज तक, लोक स्मृतियों, लोक कंठों से लेकर घाट-पाठ, पाथर-पहाड़ तक। राम की इस उपस्थिति का बहुत

कुछ आज भी अलक्षित, अप्रकाशित है यहाँ के गिरि: गह्वर, वनांतर, लोक परंपराएँ आज भी प्रतीक्षा कर रही हैं अध्येताओं, पुरातत्वविदों, इतिहासकारों, मानव-शास्त्रियों, सहृदयों का कि वे आयें और यहाँ के अतीत और जीवन में विद्यमान, व्याप्त राम का अन्वेषण-आस्वादन करें। सरगुजा के लोक-जीवन में राम रचे बसे हुए हैं। सचमुच समूचा सरगुजा सियाराममय है।

पुनीत कुमार राय,

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), अरूण प्रताप सिंह, देव शा. महा. शंकरगढ़,

पो. तहसील-शंकरगढ़, जिला-बलरामपुर (छ.ग.)